पिछले अध्याय का बचा हुआ –

आदर्श वाचन के पश्चात् छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन किया जाता है। जब छात्र अध्यापक के आदर्श पाठ के अनुरूप वाचन करने का प्रयत्न करते हैं तो उसे अनुकरण (सस्वर) वाचन कहा जाता है।

अनुकरण वाचन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

(i) अध्यापक द्वारा दिए गए आदर्श वाचन का अनुकरण करना।
(ii) शुद्ध उच्चारण करना।
(iii) वाचन में गति एवं प्रवाह का ध्यान रखना।
(iv) पाठ के भाव के अनुसार वाचन की क्षमता प्रदान करना।
(v) वाचन करते समय अर्थ-ग्रहण की योग्यता का विकास करना।

वाचन कर्त्ता के अनुसार सस्वर वाचन को पुनः दो प्रकार—

(i) वैयक्तिक वाचन तथा
(ii) सामूहिक वाचन

(i) व्यक्तिगत वाचन – व्यक्तिगत वाचन में एक ही व्यक्ति वाचन करता है। व्यक्तिगत वाचन अध्यापक द्वारा किए गए आदर्श वाचन के पश्चात् किया जाता है। तदुपरान्त एक छात्र उस पाठ को अनुकरण करता है। अध्यापक कर्त्तव्य है कि वह छात्रों को वाचन करते समय ध्यानपूर्वक देखे कि उनके पुस्तक पकड़ने का ढंग, खड़े होने का ढंग तथा ऑख से पुस्तक की दुरी ठीक है या नही। वाचन करते हुए बालक के उच्चारण पर भी अवश्य ध्यान देना चाहिए, परन्तु वाचन के मध्य में अशुद्ध उच्चारण के लिए रोकना अनुचित है। जब छात्र वाचन समाप्त कर चुके तब अशुद्ध उच्चारण को शुद्ध करना चाहिए।

(ii) सामूहिक वाचन – सामूहिक वाचन को सम्वेत वाचन भी कहा जाता है। इसका प्रयोग प्रारम्भिक कक्षाओं में अत्यधिक उपयुक्त रहता है। सम्वेत तथा सामूहिक वाचन का अर्थ है – जब एक से अधिक छात्र मिलकर वाचन करते है। सामूहिक वाचन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि जिन छात्रो को किसी के सामने व्यक्तिगत रूप से वाचन करने में झिझक का अनुभव होता है, वे सामूहिक वाचन में संकोच का अनुभव नही

करते और इस प्रकार इनकी क्लिक खूब ~~जाएगी~~ जाती है। सामूहिक वाचन करते समय अध्यापक को अग्रलिखित सावधानियाँ ध्यान में रखनी आवश्यक है —

(i) सामूहिक वाचन छोटी कक्षाओं में ही लाभदायक सिद्ध होता है। कक्षा 7 या 8 तक इनका प्रयोग सफलता के साथ किया जा सकता है।

(ii) सामूहिक वाचन बालकों के उच्चारण को शुद्ध करने के लिए जब भी प्रयोग में लाया जाए, तो बालकों के उच्चारण की शुद्धता की ओर अवश्य ध्यान दिया जाए।

(iii) सामूहिक रूप से यदि कविता का गायन कराया जाए, तो भावों के उतार-चढ़ाव के साथ अंगों का संचालन (भावभंगिमा) भी किया जाता है। अभिनय गीतों में तो भावभंगी प्रदर्शन और भी अधिक ठीक रहता है।

मौन वाचन

मौन वाचन का अर्थ —

मौन वाचन का स्थूल रूप में अर्थ है बिना होठ हिलाए, पढ़ना, पुस्तक सूक्ष्म वाचन का अर्थ चुपचाप पढ़ते हुए अधिक से अधिक अर्थ ग्रहण करना है।

मौन वाचन के लिए ध्यान देने योग्य आवश्यक बातें —

(a)- शान्तिपूर्ण वातावरण — जहाँ छात्र मौन वाचन कर रहे हों, वहाँ का वातावरण पर्याप्त शान्तिमय हो। अशान्त वातावरण में मौन वाचन करना असंभव है।

(b)- वाचन की मुद्रा — वाचन करते समय बालक मुद्रा पर विशेष ध्यान दिये जाए। अध्यापक को चाहिए कि वह देखे कि बालक उचित प्रकार से बैठकर बिना होठ हिलाये वाचन करें, बालक पुस्तक पर अधिक न झुके।

(c)- धैर्य की भावना — मौन वाचन करते समय धैर्य का रखना परम आवश्यक है। भली-भाँति भावों को समझने के पश्चात् ही आगे वाचन करना चाहिए।

(d)- विकसित शब्द-कोश — मौन वाचन करते समय पाठ्य-विषय को भली प्रकार समझने के लिए यह आवश्यक है कि बालक का शब्द कोश पर्याप्त विकसित हो। यदि बालकों का शब्द-कोश अधिक विकसित नहीं होगा, तो मौन वाचन करते समय वे किसी भी कठिन शब्द के आ जाने पर रुक जायेंगे, तथा भाव उनकी समझ में ठीक प्रकार नहीं आ पायेगा।

(e) एकाग्रता — मौन वाचन के समय उद्देश्य उस समय ही पूर्ण हो सकते हैं जबकि बालक एकाग्रचित्त से मौन वाचन करें।

(f) उचित प्रवाह तथा गति का ध्यान — अध्यापक बालकों को बतायें कि मौन वाचन करते समय वे विराम चिह्नों, गति, और प्रवाह का मन ही मन अवश्य ध्यान रखें।

मौन वाचन के उद्देश्य —

① छात्रों को मौन वाचन का अभ्यास कराना जिससे वे कम-से कम समय में अधिक से अधिक सामग्री को आत्मसात् कर सकें।

② छात्रों के शब्दकोश का विकास करना तथा उसे सक्रिय शब्दकोश में परिवर्तित करना।

③ छात्रों की बोध-शक्ति को विकसित करना, जिससे वे पढ़े गये विषय को भली प्रकार समझकर उसका यथास्थान प्रयोग कर सकें।

④ बालकों की मनन तथा तार्किक शक्ति को विकसित करना।

⑤ छात्रों में अधिक से अधिक साहित्यिक रुचि उत्पन्न करना।

मौन वाचन का महत्व —

ⓐ मौन वाचन द्वारा बालक शीघ्रता से पढ़ सकता है।

ⓑ मौन वाचन से मस्तिष्क पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है, अतः थकावट नहीं आती। फलस्वरूप, अधिक मात्रा में पढ़ा जा सकता है। इसके विपरीत सस्वर वाचन थकावट उत्पन्न करने वाला होता है, क्योंकि बालक के मस्तिष्क पर दबाव पड़ता है।

ⓒ मौन वाचन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि बालक पढ़ने के साथ-साथ विषय को आत्मसात भी करते जाते हैं।

ⓓ मौन वाचन का अभ्यास हो जाने पर छात्रों को गृह-कार्य देने में सरलता हो जाती है।

ⓔ स्वाध्याय की आदत मौन वाचन द्वारा डाली जा सकती है। बालकों में पुस्तक पढ़ने की रुचि उत्पन्न होती है और वे अवकाश के क्षणों का उपयोग पुस्तक पढ़कर ही करते हैं।

ⓕ सार्वजनिक स्थानों तथा रेल में यात्रा करते हुए किसी अखबार का सस्वर वाचन करने लगें, तो आस-पास के वातावरण में एक प्रकार की अव्यवस्था उत्पन्न हो जाएगी। ऐसे स्थानों पर मौन वाचन का ही सहारा लेना पड़ता है।

NOTE मौन वाचन के महत्व पर प्रकाश डालते समय ब्राउन (Brown) लिखते हैं—

"इसमें कोई सन्देह नहीं कि मौन वाचन में ही अधिक अल्प व्ययता है। साथ ही, यह पद्धति हमारे जीवन की प्रतिदिन की क्रियाओं के लिए भी सबसे उत्तम कही जा सकती है, क्योंकि हमारा अधिकांश वाचन मौन रूप से होता है।"